

पूर्व राष्ट्रपति को किया लॉरेट पुरस्कार-2018 से सम्मानित

संकुचित मानसिकता का भारतीय समाज में कोई स्थान नहीं : मुखर्जी

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा कि भारतीय समाज में संस्कृति समावेशी संस्कृति है और इसमें संकुचित मानसिकता का कोई स्थान नहीं है। मुखर्जी बुधवार को जेके लक्ष्मीपत विश्वविद्यालय में उनके सम्मान आयोजित 'युवा और राष्ट्र निर्माण' कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले देश में करीब 120 प्रकार की भाषाएं और उपभाषाएं बोली जाती हैं। साथ ही अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं और अलग-अलग जीवन पद्धति से जीते हैं। इस विभिन्नता में एकता ही हमारे देश की पहचान है। मानवता की सेवा को ही सर्वोपरी बताते हुए उन्होंने कहा कि देश में सदियों से मानव कल्याण को ही सर्वप्रथम माना है। इससे पूर्व मुखर्जी को पांचवें जेके लक्ष्मीपत विश्वविद्यालय लॉरेट पुरस्कार-2018 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रदान किया जाता है।



देश में बेहतर रोजगार की जरूरत

मुखर्जी ने युवाओं के लिए देश में बेहतर रोजगार की जरूरत बताई। हालांकि उन्होंने युवाओं निराश नहीं होने और हमेशा आत्मविश्वास रखने का हौसला दिया। पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे केन्द्र में इसानियत होनी चाहिए, क्योंकि व्यक्ति से ज्यादा कोई और महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए हमें संकीर्ण सोच से बाहर निकलना होगा। हमारी मूल अवधारणा में सर्वेभवन्तु सुखिन और वसुधैव कुटुम्बकम् शामिल है। इससे पहले वाइस चांसलर डॉ. आर.एल. रैना ने यूनिवर्सिटी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर जेकेएलयू के चांसलर भारत हरी सिंघानिया सहित अन्य लोग उपस्थित थे।